IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ब्रज का सामाजिक जीवन एवं लोकगीतों का अध्ययन

सौरव कुमार मिश्रा

शोधार्थी – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

Orchid id - 0009-0007-1333-4068

सारांश

भारत की संस्कृति में लोक संगीत का गहरा संबंध रहा है। भारत में विभिन्न प्रकार की भाषा (बोली) समुदाय के लोग अपनी पारंपरिक विरासत को लोक संगीत के अंदर समेटे हुए हैं। ब्रज भाषा भारत के लोक संगीत से पल बढ़कर स्वामी हरिदास के पदों,अष्टछाप कवियों की अमूल्य रचनाओं से नवल साहित्यकारों के संकलन में एवं शास्त्रीय संगीत की विधाओं में ध्रुपद–धमार के पदों में एवं खयाल ठुमरी की बंदिशों तक अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यहां के सामाजिक जीवन में धर्म,पुराण, उत्सव, संस्कारों की झलक उपस्थित दिखाई देती है। ब्रज धार्मिक आस्था का मुख्य केंद्र है, जहां राधा कृष्ण नाम संकीर्तन की सगुण साकार भक्तिभाव वहां के सामाजिक जीवन में समाहित है। एक सभ्य सुसंस्कृत समाज में संगीत एवं कला के प्रति विविधता देखने को मिलती है। ब्रज की धूलि(रज) में उत्सवों की विविधता और बृजवासियों के सामाजिक उत्सवों का उत्साह और कला के प्रति प्रम दिखाई पड़ता है।बृजवासियों का गोवर्धन पूजा एक उत्सव के रूप में मनाया जाने वाला भक्तिमय पर्व है, जहां पर भगवान श्री कृष्ण को छप्पन प्रकार के भोग लगाया जाता है साथ उनकी पूजा अर्चना की जाती है। ब्रज की सांझी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। ब्रज की लठमार होरी विश्व प्रसिद्ध है। इस उत्सव में विभिन्न प्रकार के फाग संगीत में रूप में बृजवासी प्रस्तुत करते हैं तथा इसे देखने और सुनने के लिए कई देशों से लोग एकत्रित होते हैं। बालक कृष्ण की जन्म भूमि एवं लीलास्थली होने के कारण समूचे ब्रज में आस्था, भक्ति, उत्सव और उल्लास का समागम मिलता है।इस ब्रज प्रदेश में अनेक धार्मिक स्थल मंदिर, मठ,देवालय ब्रज की संस्कृति और समाज का सामाजिक दर्पण है। यहां के उत्सवों में चल रहे लोकगीतों का विभिन्न भाव में प्रस्तुतीकरण सुनने को मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण से सगुण भक्ति के अनेक रूपों में सखा भाव,सखी भाव,दास भाव

और पति भाव में स्वीकार करने यहां की संस्कृति है। शोधार्थी का मत है कि लोक समाज और संस्कृति का अध्ययन बार–बार होना चाहिए। लोक संस्कृति समाज की विविधता के अनेक रंगों से भरी हुई है। यह रंग जीवन में सद्भावना, उत्साह एवं प्रेरणा से बांधे रखते हैं।बदलती अत्यधिक भागदौड़ की आपाधापी में हम अपनी मूल जड़ों को दरकिनार ना करें। हम अपने लोक संगीत एवं लोक संस्कृति की जड़ों को और मजबूत करें। प्रस्तुत शोध पत्र में ब्रज की विशाल सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत के साथ लोक संगीत का अध्ययन का संक्षिप्त विश्लेषण प्रकट किया गया है।

मुख्य शब्द – लोक संगीत, लोकगीत, ब्रज, सामाजिक जीवन, उत्सव

ब्रज शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के व्रज शब्द का अपभ्रंश तद्भव रूप है।ब्रज की संस्कृति अत्यंत प्राचीन मानी जाती है इसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। इन श्लोक में ब्रज को गौशाला एवं गायों के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

"गवामय ब्रजंवृद्धि कृणुष्वशधो आद्रिव"[1]

"यं त्वां जनासो अभिसंचरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ"[2]

वही यजुर्वेद के श्लोक में गायों के चरने के स्थान विशेष को ब्रज और गोशाला को गोष्ठ कहा गया है।

"ब्रजं गच्छ गोष्ठानु"[3]

श्रीमद् भागवत में श्री कृष्ण के पिता के घर के रूप में ब्रज शब्द का प्रयोग मिलता है।

"कस्मान्मुकुन्दो भगवान पितुगैर्हाद् ब्रज गतः"[4]

श्रीमद्भागवत महापुराण के समय में ब्रज शब्द का अर्थ स्थान बोध में लिया गया है,जिसका उल्लेख इस प्रकार है–

"कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बल घातिनी।

शिशुश्चचार निध्नन्ती पुरग्राम ब्रजादिषु।।"[5]

इस प्रकार ब्रज शब्द प्राचीन काल से संस्कृत,साहित्य,वेदों एवं पुराणों के माध्यम से वर्णन मिलता रहा है। इस क्षेत्र की ऐतिहासिकता एवं भक्ति काल के हिंदी साहित्य में मथुरा के निकटवर्ती क्षेत्र के नाम से वर्णित हुआ।ब्रजमंडल का विस्तार चौरासी

कोश में फैला हुआ है। इस संबंध में लोक समाज की जनश्रुतियां मिलती हैं।डा० दीनदयाल गुप्त "अपने शोध ग्रन्थ अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय में ब्रज की सीमा का उल्लेख करते हुए सोननदी को गुड़गाँव जिले की एक बरसाती नदी कहा है और अलीगढ़ को ब्रज का किनारा। इसी के साथ शौरी–पुर (बटेश्वर) को सूरसैन का गाँव मानकर तीसरे कोने की सीमा निर्धारित की गयी है और उसकी पुष्टि के लिए ग्राउस महोदय के भागवत सम्बन्धी मत को प्रस्तुत किया जाता है जिसके अनुसार वे ब्रज क्षेत्र की आकृति सिंघाड़े जैसी मानते हैं।"[6]

ब्रज का सामाजिक जीवन

ब्रज प्रदेश की अपनी विकसित सांस्कृतिक, धार्मिक जीवन इस समाज के जीवन शैली की प्रमुख विशेषता है। इस शैली में सामाजिक उत्कर्ष के आदर्श मूल्यों की संभावना निहित है। मनुष्य एक विचारशील सामाजिक प्राणी है जिसे प्रकृति के मनन चिंतन की वह शक्ति प्राप्त है जिसके द्वारा वह अनुभव की सीढ़ी से स्वयं को एवं समाज को विकसित करता है। मनुष्य की इसी क्षमता के द्वारा अनेक रीति,–रिवाज,धर्म,दर्शन और नीति के तत्वों का विकास करके उन्हें अधिक सामाजिक और व्यवहारिक बनाया। बृजवासियों का जीवन अति साधारण रूप से है। यहां के लोगों की दिनचर्या राधा नाम से शुरू एवं उसी से अंत होती है। ब्रज क्षेत्र में मंदिरों की अधिकता होने के कारण यहां के लोगों को भजन कीर्तन प्रिय है। यहां के पारंपरिक पहनावे में पुरुष धोती कुर्ता में महिलाएं लहंगा और फरिया पहनती हैं। ब्रज के संगीत की परंपरा प्राचीनतम है यहां भक्ति संगीत लोक जनों में कीर्तनभजन रूप में देखने को मिलती है। भगवान श्री कृष्ण की अष्टयाम की सेवा का नियम होता है जिसमें प्रातः काल से भगवान की सेवा में भजन, कीर्तन प्रारंभ होकर रात्रि शयन तक पद गायन करके सेवा की जाती है।यहां वृंदावन के टटिया स्थान में समाज गायन की परंपरा में स्वामी हरिदास के पदों को गाते हुए देखा जा सकता है।ब्रज संस्कृति में साज सज्जा की कलात्मक भावना चरम पर दृष्टिगोचर होती है।प्राचीन समय से मुकुट श्रृंगार और होरी निवार तैयार करने में ब्रज प्रसिद्ध रहा है। यहां पर श्री कृष्ण को सजाने के लिए फूल बंगले,केले की सजावट, सूखे रंगों से बनाए जाने वाले सांझी मंदिरों के माध्यम से विकसित हुई।बृजवासियों की जीवन शैली सहज एवं सरल होने के कारण कृत्रिमता से कोसों दूर है। इनके उपासक महाभारत के योगी कृष्ण नहीं बल्कि गाय

चराने वाले, बंसी की धुन पर सबको मंत्रमुक्ध कर देने वाले माखन चोर कन्हैया है। इसी का गुणगान इन पंक्तियों में है

वृंदावन के वृक्ष को मरम न जाने कोय।

डाल डाल अरु पात–पात पै राधा कृष्ण होय।।

ब्रज के प्रचलित लोकगीत

लोकगीत मानव हृदय की प्राकृतिक अभिव्यक्ति है। लोकगीतों की परिपेक्ष्य में ब्रज में विभिन्न उत्सवों पर गाए जाने वाले गीत मांगलिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीत पाए जाते हैं। इन लोकगीतों में राधा कृष्ण के नाम जोड़कर गाने की विशेषता है। इन्हीं लोकगीतों में ब्रज का पूरा जीवन प्रतिबिंब दृश्य होता है।ब्रज के प्रचलित लोकगीतों को मुख्य तीन प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

- त्योहार संबंधी लोकगीत
- उत्सव संबंधी लोकगीत
- संस्कार संबंधी लोकगीत

- त्योहार संबंधी लोकगीत

त्योहार मानव जीवन के उत्साह के अभिन्न अंग है जो जीवन में नवीनता प्रसन्नता का उपहार लेकर आते हैं। ब्रज में विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं। जिसका वर्णन लोकगीतों के साथ निम्न प्रकार है

गणगौर – इस त्यौहार को कुमारी कन्याओं के पूजन एवं खेल के संबंध में मनाया जाता है जो कि चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से आरंभ होता है तथा अंतिम पूजा शुक्ल पक्ष तृतीया को होती है। इस त्यौहार के दिन घरों में मिट्टी और लकड़ी की पार्वती की प्रतिमा स्थापित कर महिलाएं उसका पूजन करती हैं और गणगौर के गीत गाती है।

गौर ए गनगौर माता, खोल किवाड़,

बाहर ठाड़ी तिहारी पूजन हारी।

गढ़ि लाई म्हारी गौर, छोटौ सौ खेलना।[7]

यमुना छट – मां यमुना के जन्मदिवस के रूप में किस त्यौहार को मानते हैं जहां पर यमुना के घाट की सजावट की जाती है। वल्लभ संप्रदाय में यमुना जी की विशेष पूजा अर्चना की जाती है।इस दिन मंदिरों में गीत संगीत गाए जाते हैं।

जै–जै श्री सूरजा कलिंद–नंदिनी।

गुल्म–लता–तरू सुवास, कुंद कुसुम मोदमत्त भ्रमर–मधुप पुलिन सुरभि वायु मंदिनी ।।

हरि समान धर्मसील, कांति सजल जलद नील, तट नितंब भेटति नित गति सुछंदिनी।

सिकता गन मुकता, मानों कंकन जुत भुज तरंग, कमलनि उपहार लै पिय चरनवंदिनी ।।

श्री गोपेन्द्र–गोपि संग, स्रम–जल कन सिक्त अंग, अति तरंग निरखि नैन रस सुफंदिनी ।।

छीतस्वामी प्रभु गिरिधर धनि–धनि आनंदकंद, श्री यमुना दुरित हरति पाप महा आनंदिनी।।[8]

हरियाली तीज

श्रावण मास में प्रकृति के नवल श्रृंगार के साथ ब्रज में उत्सव शुरू हो जाते हैं। घरों में महिलाएं लड़कियां मेहंदी के रंग सजाती हैं तथा विभिन्न प्रकार से साज सज्जा श्रृंगार करती हैं। इसी मास में झूले की परंपरा है और साथ में सावन गीत गाए जाते हैं।

मोइ नागिन बनि के डसि गई, मोहन तेरी बाँसुरिया।

मैं अपने महल में सोय रही, वो बाजी बाँसुरिया।

मेरे लगी करेजा में तीर, जिगर में चुभि गई बाँसुरिया।

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे, चमके बीजुरिया।

मैं कैसे आऊँ स्याम, हमारी भीजै चूँदरिया।

सासऊ सोवै ससुरऊ सोवै, जागै ननदुलिया।

मै कैसे आऊँ स्याम, हमारी बाजै पाइलिया।[9]

देवोत्थान एकादशी – इस त्यौहार को कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के दिन मनाया जाता है। इस तिथि को ब्रज समाज में उपवास रखा जाता है। क्षेत्रीय मान्यता है कि इस दिन भगवान चातुर्मास शयन के बाद उठते हैं। इस दिन ब्रज में गीत संगीत गाये जाते हैं।

आज प्रबोधिनी परम मोदकर, चली प्यारी पिय पै लै जाऊँ।

बहुत ईखरस कुँज–पुँज रचि चहुँ ओर दीपकन सुहाऊँ।।

चित्र विचित्र भूमि अति चीती, करि उत्पादन हरिहिं जगाऊँ।

ताल–मृदग–झांझ–संखन धुनि द्वारे बंदनवार बँधाऊ ।।

चार जाम जागरन जागि कै, चार भोग अधरामृत पाऊँ।

रसिकराय के रहसि सिंधु में, नैनन मीन झकोरि न्हवाऊँ।।[10]

- उत्सव संबंधी लोकगीत

ब्रज में राधा कृष्ण के भक्ति से सराबोर समाज अपनी श्रद्धा भावना को प्रकट करने के लिए अनेक उत्सव मनाता है। कुछ उत्सव मंदिरों में बड़े धूमधाम से बनाए जाते हैं जैसे कृष्ण जन्मोत्सव, ब्रह्मोत्सव, नंदोत्सव,गोपाष्टमी

बसंत उत्सव – ब्रज की पारंपरिक उत्सवों में बसंत का उत्सव अति उल्लास पूर्वक से बनाया जाता है। इसी दिन विद्या की देवी सरस्वती का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है। मंदिरों में सरसों के पीले फूल,रेवड़ी तथा बैर से भोग अर्पण किया जाता है। अबीर गुलाल के रंगों के साथ बसंत के स्वागत पद गाए जाते हैं।

खेलत बन सरस बसंत लाल। कोकिल कल कूजत अति रसाल।।

जमुना के तट फूले तमाल। केतकी–कुंद नौतन प्रबाल ।।

तहाँ बाजत बीन–मृदंग–ताल। बिच–बिच मुरली अति ही रसाल।।

नव बसंत साजि आई ब्रज की बाल। सजि भूषन–बसन अंग, तिलक भाल।।

चोबा, चंदन, अबीर हु गुलाल । छिरकत है पिय मदन गुपाल।।

आलिंगन, चुंबन देत गाल। पहरावत उर फूलनि की माल।।

इहिं विधि क्रीडत ब्रज–नृप कुमार। कुंभनदास बलि बलि बलिहार।।[11]

होली का उत्सव

ब्रज में होरी की धूम समस्त जग में व्याप्त दिखाई पड़ती है। इसे ब्रज की शोभा के रूप में देख सकते हैं। ब्रज के गांव में होली के आकर्षक कार्यक्रमों में नंदगांव बरसाने की लठमार होली बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। इस बीच होली के लोकगीत गाए जाते हैं जो निम्न प्रकार से हैं

आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।

उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में बोरी रे रसिया।

बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और मंजीरन जोरी रे रसिया।

फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर–भर झोरी रे रसिया।

इत सो आये कुँवर कन्हैया, उत सों कुँवरि किसोरी रे रसिया।

नंदगाँव के जुरे हैं सखा सब, बरसाने की गोरी रे रसिया।

दोउ मिलि फाग परस्पर खेलें, कहि–कहि होरी होरी रे रसिया।[12]

गोवर्धन पूजा

यह उत्सव ब्रज में कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को धूमधाम से मनाने की प्राचीन परंपरा है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्री कृष्ण को इंद्रदेव के कोप से बचाने एवं छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठाने से गोवर्धन पूजा प्रचलन में आया। इस अवसर पर सामूहिक रूप से गीत गाने की प्रथा है जो इस प्रकार है

मेघ मालनु ते कहयौ ललकारि, ब्रज पै बरसै पनियां ढार।

उमड़ि घुमड़ि ब्रज घेरिकें, उठी घटा घनघोर ।

चमचम चमकै बीजुरी, चौके ब्रज के मोर।

मूसकधार जलु रेला के संग सुरपति बरसायौ ।

धरि नख पै गिर्राज नामु गिरधारी है पायौ।।[13]

जन्माष्टमी

समूचे ब्रज में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हर्षोल्लास से मनाया जाता है। ब्रज सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण लोकोत्सव के रूप में जन्माष्टमी मनाया जाता है। इस दिन अनेक मंदिरों में एवं घरों में लोकगीत एवं पद गाए जाते हैं

नैन भर देखो नन्द कुमार।

जसुमति कूख चन्द्रमा प्रगटयों या ब्रज को उजियार।

अपनी–अपनी भेंट सबे मिलि लाओं विविध श्रृंगार ।

हरद–दूब अक्षत दधि कुंकुम मण्डित करो दुबार।

पूरो चौक विविध मुक्ता फल गावो मंगलचार।

चहूं वेद ध्वनि करत महामनि होत नक्षत्र विचार।

उदयो पुण्यको पुंज सावरो सकल सिद्धि दातार ।।[14]

राधा अष्टमी

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि को राधा जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। वृंदावन,बरसाना आदि के मंदिरों में राधा जन्मोत्सव के समारोह किए जाते हैं। इस अवसर पर उनके लिए बधाई का गीत एवं पद गाए जाते हैं।

कीरति रानी आपनु मंगल गाव।

आज लली को जन्म दिवस है मोतिन चौक पुरावै।।

अन्वाचार्य मुनि गर्ग पराशर तिनपें वेद पढ़ावै ।

कुंवरि तन पर करि, न्यौछावर जन परमानन्द पावैं ।।[15]

साँझी लोक उत्सव

यह उत्सव आश्विन मास के पितृपक्ष में विशेष रूप से मनाया जाता है। साँझी ब्रज की लोक देवी है।ब्रज की बालिकाओं द्वारा साँझी का पूजन किया जाता है। पूजन के समय बालिकाएं अनेक गीत गाती है जो इस प्रकार है

जाग माई, जाग माई, खोल किवार। मैं आई तेरे पूजन द्वार।।
पूजि–पुजंतर बेटी, का फल मांगे ? भैया–भतीजे संपति होइ।
भैया चाहिएँ नौ–दस–बीस । भतीजे चाहिएँ पूरे बत्तीस ।।
साँझी मैना री, का ओढ़ेगी, का पहिरैगी, काहे कौ सीस गुँथावैगी?
मैं तो सालू ओढूंगी, मिसरू पहिरूंगी, मोतियन की माँग भराऊंगी।
वो जैमें मेरे साँझालाल भाई जी, जिनकी आँखें लाल कटारी सी।
केसरिया बागौ पहिरें जी, वे तौ दादा जो के कुमर कहावें जी।।[16]

- संस्कार संबंधी लोकगीत

संस्कारों का होना किसी समाज की अहम विशेषता है। इन संस्कारों में समाज की परंपराएं और मान्यताएं निहित है। संस्कारों का प्रादुर्भाव ऋषि जीवन से हुआ है तथा मानव जीवन को धर्म चक्र से बांधे रखने के लिए संस्कारों का निर्माण किया गया है। मानव जीवन में प्रमुख 16 संस्कार होते हैं जो की ब्रज समाज में देखे जा सकते हैं।पूर्णिमा श्रीवास्तव के अनुसार "संस्कार गीतों के कारण ही बहुत से संस्कार जीवित हैं। जब तक संस्कार से संबंधित लोकगीत रहेंगे तब तक संस्कार भी जीवित रहेंगे, चाहे सामाजिक व्यवहार में इन संस्कारों का प्रचलन समाप्त हो जाये, परन्तु व्यक्ति के सामने कुछ न कुछ संस्कारों की रूपरेखा रहेगी। संस्कार गीत भूले–भटके मनुष्य को याद दिलाते रहेंगे कि हम क्या थे और क्या हो गये।"[17] इस प्रकार संस्कार ही वह सूत्र है जिसमें समाज सहजता से समन्वय स्थापित करते हैं। इस प्रकार ब्रज के कुछ प्रमुख संस्कार गीत निम्न प्रकार से है

जन्म संस्कार गीत

मनुष्य जीवन में जन्म संस्कार का प्राचीन ग्रंथो में बड़ा महत्व बताया गया है। जन्मना जायते शूद्र संस्कारात् भवेत् द्विज।ब्रज में शिशु जन्म के अवसर पर बधाई गीत गाने की परंपरा है जो कि इस प्रकार है

बधाई बाजी नन्द के।
बाबा नन्द तो ठाड़े बजाजे में, करि कपड़न कौ भाव। .
सुई सोसनी लाल दुपट्टा, पीरी देत बुलाय–बुलाय ।
बाबा नन्द तो ठाड़े खिरक में, करि गोअन को दान।

कारी कामरि धौरी धूमरि, सजन मन भावै सोई लैओ।[18]

2

लये ब्रज के बिहारी अजब पालना,

झूलत कन्हैया अजब पालना।

तेरे बाबा को बधाई अरे ललना,

तेरी अम्मा झुलावे तुझे पालना।

अगरू चंदन को बनो तेरो पालना,

झूलो–झूलो हमारे दुलारे ललना।[19]

विवाह संस्कार लोकगीत

जन्म के पश्चात मानव समाज का दूसरा महत्वपूर्ण संस्कार विवाह संस्कार माना जाता है। यह संस्कार दो शरीर को एक आत्मा के एकीकरण को बल देता है। यह संस्कार समाज के स्थापना का कारक है। इस संस्कार में ब्रज में कई तरह के लोकगीत गाए जाते हैं जो कुछ इस प्रकार है

1

शुभ दिन आज, तिलक बरने घर आयौ है, सुखद समय आज मंगल समय आयौ है।

चाँदी की चौकी मंगाई, बरने को उस पर बैठायौ है साले ने मंगल तिलक बरनै के माथे लगायौ है

मंगल सगुन बरने को थमायौ है, मुख में बीड़ा खिलाऔ शुभ दिन आज, तिलक बरने घर आयौ है।[20]

2

नन्द को दुलारो मेरो बन्ना।

सिर सोहै जाली को चीरा, कलगी लहरिया लहरियादार मेरो बन्ना।

कान सोहै सूरति को मोती, चुन्नी लहरिया लहरियादार मेरो बन्ना।

नन्द को दुलारो मेरो बन्ना।

नैन सोहै कश्मीरी सुरमा, बिरिया लहरिया लहरियादार मेरो बना।

गले सोहै सुबेदारी कण्ठा, माला लहरिया लहरियादार मेरो बन्ना।

नन्द को दुलारो मेरो बन्ना।

हाथ सोहै हिरउदी अँगूठी, पहुँची लहरियादार मेरो बन्ना।

अंग सोहै कांसे को जामा, जमघर लहरिया लहरियादार मेरो बन्ना।

नन्द को दुलारो मेरो बन्ना।[21]

अंत्येष्टि संस्कार

षोडश संस्कारों में अंतिम और महत्वपूर्ण संस्कार अंत्येष्टि संस्कार है। आत्मा और शरीर का संबंध क्षणभंगुर है, जिसमें आत्मा शरीर के बंधन से मुक्त होकर प्रकृति में विलीन हो जाती है। इस अवसर पर ब्रज में केवल चतुर्वेदी समाज में गीत गाया जाता है जो इस प्रकार है

काए के कारन जौ बए, और काहे के हरे हरे बाँस।

हरि रे किसन कैसें तिरयऔं।

लाला धरम के कारन जौ बए, मरन के काजें हरे हरे बाँस ।

हरि रे किसन कैसें तिरयऔ।

बेटी न ब्याही आपनी, मढ़हे न लीयौ कन्यादान। हरि रे किसन कैसें तिरयऔं।

साजन न झुल में द्वार, हरि रे किसन कैसे तिरयऔ।

काए के कारन गऊ दई, काए के दीए गउ दान।

हरि रे किसन कैसे तिरयऔ।

पार के काजे गऊ दई, और तरन कूँ दए गऊ दान।

हरि रे किसन कैसें तिरयऔ।[22]

निष्कर्ष – ब्रज के सामाजिक लोकगीतों के अध्ययन से हम कह सकते हैं कि इन लोकगीतों में समाज का जनजीवन मुखरित हुआ है। बृजवासियों क उत्सव, त्योहार और संस्कार में लोकगीतों का विशेष महत्व परिलक्षित हो रहा है। इन गीतों में जन्म संबंधी गीत, विवाह संबंधी गीत, उत्सव संबंधी गीत आदि के गीतों का जनजीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण प्राचीन परंपराएं वर्तमान समय में भी संस्कार के रूप में समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। मानव जीवन अपने विभिन्न अभिव्यक्ति के साधन में लोकगीतों से जुड़ा दिखाई पड़ता है। लोकगीतों के संगीत से मानव जीवन में रस का संचार होता है और वह कुछ समय के लिए सब कुछ भूल कर हर्षोल्लास के सागर में डुबकियां लगाता है। ब्रज का सामाजिक जीवन एवं लोकगीत परंपराओं के रूप में जीवित रहे जिससे कि भारत के सांस्कृतिक विविधता का,अनेकता में एकता का सूत्र जीवित रहे।

संदर्भ सूची

1 ऋग्वेद 1.10.7

2 वही –10.4.2

3 वही 1.25

4 श्रीमद् भागवत 10.7.10

5 वही 10.6.2

6 डॉ सत्येंद्र – ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन पृष्ठ 51

7 मित्तल, प्रभुदयाल – ब्रज संस्कृति की भूमिका पृष्ठ 242

8 वही पृष्ठ 245

9 गुप्त शालिग्राम – ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा पृष्ठ 267

10 मित्तल प्रभु दयाल ब्रज संस्कृति की भूमिका पृष्ठ 263

11 वही पृष्ठ 231

12 चतुर्वेदी, राजेंद्र रंजन –ब्रज लोकगीत पृष्ठ 42

13 गुप्त शालिग्राम – ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा पृष्ठ 258

14 उत्सव त्रैमासिक पत्रिका वर्ष एक अंक 1,2,3 पृष्ठ 3

15 वही पृष्ठ 6

16 मित्तल, प्रभुदयाल – ब्रज संस्कृति की भूमिका पृष्ठ 262

17 श्रीवास्तव, पूर्णिमा – लोकगीतों में समाज पृष्ठ 58

18 गुप्त, शालिग्राम – ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा पृष्ठ 238

19 गुप्त, शालिग्राम – ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा पृष्ठ 239

20 ब्रज में प्रचलित गीत

21 गुप्त, शालिग्राम – ब्रज और बुंदेली लोकगीतों में कृष्ण कथा पृष्ठ 298

22 डॉ सत्येंद्र – ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन पृष्ठ 232